ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 202-207

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

आधी सदी से अधिक फैले 'मित्र संवाद' के विभिन्न पक्षों की पड़ताल

डॉ0 जसवीर त्यागी E-mail: drjasvirtyagi@gmail.com

Received- 13.02.2021, Revised- 17.02.2021, Accepted - 22.02.2021

सारांश : *मित्रता उच्चतर जीवन मूल्यों में से एक है। सच्चा मित्र हमारे सुख–दुःख का सच्चा सहचर होता है। मित्रता, स्नेह, सच्चाई, समर्पण की भावभूमि पर होती है। मित्रता में छोटे–बड़े, अमीर–ग़रीब, अपना–पराया जैसे भावों के लिए जगह नहीं होती। मित्रता का मोती समानता की सीपी में रहता है। 'मित्र संवाद' कवि केदारनाथ अग्रवाल और आलोचक रामविलास शर्मा के चौसठ वर्षों का पत्र–व्यवहार है। पत्र जो परस्पर एक–दूसरे को लिखे गये हैं। आज के इस अवसरवादी युग और बाज़ारवादी संस्कृति में जहाँ मित्रता लेन–देन व लाभ–हानि की संभावना से बनती टूटती है, ऐसे समय में आधी शताब्दी से अधिक समय तक चलने वाली केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा की यह मित्रता दुर्लभ जान पड़ती है। इन पत्रों में दोनों लेखकों के अंतरंग जीवन का इतिहास भी अंकित है और साथ ही इनमें पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक परिवेश की भी अभिव्यक्ति है। दो मित्रों के एक–दूसरे की हाँ में हाँ मिलाने वालों के, ये पत्र नहीं हैं। इनमें दुनिया–जहान की बातें गहरे सरोकारों के साथ उपस्थित हैं। दोनों पत्र लेखक मित्र अपने समय, समाज से सार्थक संवाद करते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में 'मित्र संवाद' के पत्रों की विशिष्टताओं पर विचार किया गया है।*

कुंजीभूत शब्द– कवि, आलोचक, मित्रता, पत्र, समर्पण, वैचारिक–साम्यता।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। वह जितने सफल सामर्थ्यवान कवि हैं, उतने ही सशक्त गद्यकार भी हैं। वह जहाँ एक ओर अपने श्रेष्ठ रचना–कर्म के लिए जाने जाते हैं, वहीं दूसरी ओर आत्मीय, अंतरंग, अटूट मित्रता के लिए भी प्रसिद्ध हैं। उनके घनिष्ठ मित्र हैं, हिंदी आलोचना के शिखर पुरुष डॉ॰ रामविलास शर्मा। दोनों साहित्यकारों की दोस्ती हिंदी जगत् में एक विशिष्ट पहचान बनाती है। जिसका पुख्ता प्रमाण 'मित्र संवाद' है। जो इन दोनों मित्रों के एक–दूसरे को लिखे पत्रों का संकलन है। पत्रों में एक दौर झांकता है। उनमें साहित्यिक विचारों, टकराहटों, संघर्षों और मान्यताओं की झलक होती है। हिंदी आलोचक रविभूषण का मानना है – "कवियों–लेखकों के बीच पत्र–व्यवहार उनके व्यक्तित्व–कृतित्व को समझने के अलावा उनके समाज और युग को भी समझने में मदद करते हैं।"

'मित्र संवाद' यानी दो मित्रों की बातचीत। दो मित्र हैं – कवि केदारनाथ अग्रवाल और आलोचक रामविलास शर्मा। बातचीत का माध्यम पत्र हैं। जो सन् 1935 से आरंभ होकर सन् 1999 तक निरंतर प्रवाह में चलते हैं। 'मित्र संवाद' में यह बातचीत चौंसठ वर्षों तक यानी की आधा शताब्दी से अधिक समय तक जारी रहती है। जो कि अपने आप में एक कीर्तिमान है, जैसा कि रामविलास शर्मा ने भूमिका में लिखा है –"दोनों तरफ़ से पत्र–व्यवहार लगातार जारी रहे, ऐसा कम होता है। जारी रहे तो वह पत्र–व्यवहार सुरक्षित रहे, ऐसा और भी कम होता है।" लेकिन इन दोनों मित्रों पर यह पंक्तियाँ लागू नहीं होती। यहाँ पत्र–व्यवहार जारी भी रहता है और सुरक्षित भी। सन् 1935 में महाकवि निराला के निवास पर दोनों मित्रों की मुलाक़ात हुई थी। जैसा कि केदारनाथ अग्रवाल अपने एक साक्षात्कार में कहते हैं – "डॉ. रामविलास शर्मा से मेरी पहली मुलाक़ात सन् 1935–36 में लखनऊ (भूसामंडी) में निराला के यहाँ हुई थी। वे सद्चरित्र आदमी थें। साहित्य की विवेकपूर्ण दृष्टि से प्रभावित हुआ।" उस समय रामविलास शर्मा अंग्रेज़ी में एम॰ए॰ उत्तीर्ण करने के बाद शोध प्रक्रिया से गुजर रहे थे, और केदार कानपुर में वकालत पढ़ रहे थे। पहली मुलाक़ात में दोनों के ह्रदय में मित्रता का भाव जाग्रत हो गया था। फिर भी रामविलास शर्मा ने धैर्य और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए केदार को कहा – "मेरी अच्छाइयों को जानने से पहले धीरे–धीरे मेरी बुराइयों को पहले जान लो, जिससे बाद में उनका ज्ञान होने पर तुम मुझे अपने ह्रदय से सहसा निकाल न फेंको।" पर केदारनाथ अग्रवाल की पकड़ एक सच्चे और पारखी दूरदर्शी कवि की थी। उन्हें अपने सहज बोध पर विश्वास था – "इस तरह से मेरा परिचय हुआ और फिर तो तब से लेकर आज तक – एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि हमारी दोस्ती में शिकन या दरार पड़ी हो, और हम एक–दूसरे से मुँह मोड़ सके हों। कहने का मतलब यह है कि परिचय जो सूक्ष्म था, वही दोस्ती में बदल गया और हमारी दोस्ती प्रगाढ़ होती चली गई।" मित्रता में सहजता, सरलता होना ज़रूरी है। इन दोनों की मैत्री में सहज बोध, समर्पण, ईमानदारी, आशावाद, यथार्थवाद और सृजन के प्रति आस्था के गुण मिलते हैं।

डॉ॰ रामविलास शर्मा में 'मित्र संवाद' की भूमिका में लिखते हैं – "संवाद एक ही तरह के दो व्यक्तियों के बीच हो तो सुनने वाले को मज़ा न आएगा। दोनों व्यक्ति एकदम भिन्न स्वभाव के हों तो संवाद होना ही मुश्किल है।" 'मित्र संवाद' के दोनों लेखक एक ही तरह के दो व्यक्ति नहीं है। एक कवि है और दूसरा आलोचक। एक प्रोफ़ेसर है और दूसरा

एसोसिएट प्रोफ़ेसर– हिंदी–विभाग, राजधानी कॉलेज, राजा गार्डन, नई दिल्ली, भारत

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

वकील। न ही दोनों का स्वभाव एकदम भिन्न है, दोनों ही सहज, सरल, ईमानदार लेखक हैं। इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए – "जहाँ तक मैं जानता हूँ इस तरह मित्रों का संवाद सुनने का अवसर आपको अन्य किसी पत्र–संग्रह में न मिलेगा।" 'मित्र संवाद' के पत्रों में एक नये केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा दिखाई देते हैं। अनौपचारिक, सहज व्यक्तित्व के धनी। सच्ची मित्रता के एक–एक क्षण को जीते हुए। प्रेम करने वालों के हृदय में जो सरलता, निश्छलता और अनन्यता होती है वह इन पत्रों में व्याप्त है। डॉ॰ शर्मा पठन–पाठन से जुड़े रहे हैं। उनका अधिकांश समय पढ़ने–लिखने में व्यतीत होता था। उनके पास केदार की तुलना में ज़्यादा समय था। वह स्वयं लिखते हैं – "आमतौर से आपको ऐसा लगेगा कि केदार फुर्सत में चिट्ठियाँ लिख रहे हैं, दरअसल फुर्सत मुझे रही है, केदार को फुर्सत का समय निकालना होता था। वह वकील थे, दिन भर कचहरी करते थे, रात में उन्हें पढ़ने–लिखने का अवकाश मिलता था।" दोनों मित्रों में एक–दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण है। दोनों निरंतर लिखते–पढ़ते हैं। उन्हें जो उपयोगी और महत्त्वपूर्ण लगता है, वे चाहते हैं कि दोनों मित्रों को उसकी जानकारी हो। डॉ॰ शर्मा के अधिकांश पत्रों में पठन–पाठन और लेखन के संदर्भ हैं। वे व्यवस्थित ढंग से योजना बनाकर काम करने वालों में रहे हैं, और इसी के अनुरूप वह अपने मित्र केदारनाथ अग्रवाल को भी ढाल लेना चाहते हैं। पत्र में केदार से पूछते हैं – "मैंने तुम्हें जो ऐस्से की किताब दी थी, वह पढ़ी या खो दी।"

केदारनाथ अग्रवाल एक कवि हैं, स्वतंत्र होकर काव्य–रचना से जुड़ना चाहते हैं, लेकिन कभी–कभी वकालत उनके मार्ग की बाधा बन जाती है, और केदार शिकायती स्वर में लिखते हैं –"साली वकालत भी बेड़ियों की तरह पैर में पड़ी है, रोटियाँ क्या देती है मुझे ख़रीद लिया है। मुझे अपनी गुलामी पर खीझ होती है। ऐसा लगता है कि अपने ही जूते अपने सर पर मारकर ख़ून निकाल लूँ। छोड़कर जाता हूँ तो मुअक्किल मरता है। नहीं मालूम क्या–क्या मेरे मन में इस समय गुजर रहा है। मैं हूँ तो यहाँ पर तुम्हारे कमरे में मच्छड़ की तरह ही भनभना रहा हूँ।"

केदारनाथ अग्रवाल जब रामविलास शर्मा की तरह व्यवस्थित अध्ययन नहीं कर पाते, तो उनका संस्कृत न पढ़ जाने का दुःख गहरा हो उठता है और वह रामविलास शर्मा को पत्र में लिखते हैं – "हाय रे भाग्य कि मैं संस्कृत नहीं जान पाता। गधा हूँ जो मैंने इसे पढ़ा नहीं। पढ़ता तो रस–विभोर हो लिया करता। तुम बड़भागी हो कि प्रयत्न करने में चूकते नहीं और नई–नई भाषा सीखकर विश्व के समस्त काव्य का रस लेते हो।" ऐसा नहीं है कि दोनों मित्रों में कोई समझौतावादी मैत्री है। किसी लालच, स्वार्थ, 'परस्पर–प्रशंसा' नीति की उपज है। ऐसा भी नहीं है कि दोनों एक–दूसरे की शर्तों पर जीने वाले हैं। समय–समय पर शिकवा–शिकायत, मान–मनौव्वल, प्रेम–युद्ध भी होता है। दोनों मित्र अपने निजी व्यक्तित्व का कहीं भी हनन नहीं करते, और न ही अपनी मान्यताओं और विचारों को एक–दूसरे पर आरोपित करते हैं। डॉ॰ शर्मा ने केदार को साफ़ स्पष्ट शब्दों में लिखा – "मेरी राय एक दोस्त की राय है। उसे सुनो झगड़ो और हमेशा करो वही जो जँचे। कलाकार की यही परख है, और समझदार की यह औरों की भी सुने।" केदार भी यही चाहते हैं – "जो उचित समझो–लिखो। न मेरा लिहाज करो – किसी का ....।" डॉ॰ रामविलास शर्मा एक प्रखर आलोचक हैं। केदार पत्रों में अपनी कविताएँ उनके पास भेजते रहे हैं। डॉ॰ शर्मा रचना को मूल्यांकन करते समय मित्रता को केंद्र में नहीं लाते। उस समय वे मित्र धर्म को अलग रख आलोचकीय धर्म का निर्वाह करते हैं। अपने प्रिय कवि निराला पर लिखी उनकी पुस्तक "निराला की साहित्य साधना" इसका प्रमाण है। केदार अपने मित्र के स्वभाव और विवेकपूर्ण दृष्टि से भलीभांति परिचित हैं। वह भी चाहते हैं कि उनकी कविताओं के प्रति एक सच्चे आलोचक का निष्पक्ष मूल्यांकन हो – "निर्मम होकर विवेचन करो, मुझे बल और विवेक मिलेगा।" डॉ॰ शर्मा केदार की कविताओं की मुक्त हृदय से आलोचना करते हैं। वह काव्य–रचना को व्यक्तिवाद के सीमित दायरे से निकालकर सामाजिक धरातल पर देखते हैं। समय–समय पर केदार को सच्चे कवि–कर्म के प्रति सावधान भी करते हैं–"तुम कविता में नारी पर लिखना कुछ कम कर दो गाँव देहात पर लिखो।" केदार ने भी अपने मित्र की सलाह का सम्मान किया। उनकी कविताओं में गाँव–देहात का, प्रकृति का सहज स्वाभाविक चित्रण हुआ है। डॉ॰ शर्मा केदार की कविताओं के प्रति जल्दी आश्वस्त नहीं होते। उसे बाह्य और आंतरिक पक्षों की कसौटी पर कसकर देखते हैं। केदार कला को सार्वजनिक कृतित्व मानते हैं – "मेरी तो सदैव यह धारणा रही है कि साहित्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, चाहे वह मेरे विरुद्ध हो या फिर किसी अन्य के साहित्य न मेरी बपौती है न किसी और की। वह सार्वजनिक कृतित्व होता है।" समय आने पर केदार डॉ॰ शर्मा से हँसी मखौल करने से भी नहीं चूकते हैं। उनकी हर बात को स्वीकार नहीं करते। अपनी कविताओं के संदर्भ में, निराला और दिनकर के साहित्य को लेकर तथा छंद और शिल्प से जुड़े मुद्दों पर तर्क–वितर्क करते हैं। केदार जब किसी विषय पर ग़लत राय ज़ाहिर करते हैं, तो डॉ॰ शर्मा भी उनका कान पकड़कर दो तमाचे लगाने से पीछे नहीं हटते। जैसा कि केदार ने निराला और कीट्स की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए लिखा, तो डॉ॰ शर्मा ने एक अनुभवी शिक्षक की तरह केदार को समझाया –"सुसरे राम की शक्ति पूजा के लिए लिखा है, हाइपीरियन के आगे नहीं ठहरती। तबियत होती है, बांदा आकर तुम्हारे कान पकड़कर दो तमाचे लगा दूं।" दोनों मित्रों में एक–दूसरे के प्रति गहन अपनापन है। मन की आँखों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

से हर क्रियाकलाप पर नज़र रखना। एक के मन में क्या चल रहा है, बिना कहे ही उसे समझना। एक–दूसरे के खान–पान, सोने–जागने, उठने–बैठने, घूमने–टहलने, रोजी–रोज़गार, पठन–पाठन, परिवार के सदस्यों से लगातार स्नेह–सरोकार रखना, एक दूसरे की प्रगति में अपनी ही उन्नति मानना – आज इस लेन–देन की संस्कृति में कहाँ मिलता है। केदारनाथ अग्रवाल अपनी पुत्री किरण के पति के देहांत पर दुःखी हैं। ऐसे दुःख भरे असहनीय क्षणों में डॉ॰ शर्मा ने उन्हें दुःख से लड़ने की प्रेरणा देते हुए पत्र में लिखा – "जब तक हम उन्हें प्यार करते रहते हैं, तब तक वे हमारे लिए मृत नहीं है लेकिन उनका अभाव हृदय का क्लेश देता ही है। मनुष्य का कर्म ही दुःख का एकमात्र उपचार है। दुःख सहने से तुम्हें अपने और समाज के लिए शक्ति मिलेगी – दुःख का संभवतः यही एक मात्र गुण है।" दोनों मित्र एक–दूसरे के प्रति स्नेह, सहयोग, समर्पण का भाव रखते हैं। किसी को अगर एक–दूसरे की अस्वस्थता का पता चलता है तो दौड़े–दौड़े आते हैं, और दवाइयों, सुझावों, हिदायतों की झड़ी लगा देते हैं। जैसे डॉ॰ शर्मा के हाथ में चोट लगने पर केदार रात भर जाग–जागकर उनकी देखभाल करते हैं –"मैं तुम्हारे पास हूँ, तुम्हें देख रहा हूँ। तुम्हारे साथ सामने बैठा मौन ही बात कर रहा हूँ। तुम रात को सो रहे हो। मैं आँखें खोल–खोलकर तुम्हारे हृदय की धड़कने और उस घायल हृदय की दृढ़ता को देख–सुन रहा हूँ। यह न समझो कि कान ही सुनते हैं। आँखें भी ऐसे समय में सुनने लगती हैं।" दुःख के क्षणों में केदार की आँखें देखने के साथ–साथ सुनने का काम भी करने लगती हैं। यह कवि केदार के व्यक्तित्व की सजगता और मित्रता के प्रति अटूट विश्वास का परिचायक है।

डॉ॰ शर्मा प्रायः गंभीर लेखन कार्य में व्यस्त रहते हैं, केदार उन्हें जल्दी–जल्दी पत्र न लिखकर कर्म और कर्त्तव्य पर अडिग रहने की सलाह देते हैं – "मैंने तुम्हें पत्र इसलिए नहीं लिखा था कि तुम मार्क्स के अनुवाद में व्यस्त होओगे और मेरा पत्र पाकर मेरे बारे में सोचने लगोगे। ध्यान बंट जाएगा वह काम ज़रूरी है, पूरा कर लो, मेरी वजह से उसमें बाधा न पड़े।" यह भाव वही समझ सकता है जो मित्रता के निःस्वार्थ, आत्मीय, अटूट संबंध को समझता है। डॉ॰ शर्मा की पत्नी के बीमार होने पर केदार ने पत्र में लिखा – "बीमारी की दशा में मार्क्स पत्नी के साथ कमरे में दिल की दुनिया की बातें कर रहे थे ...। वही दशा मैं देख रहा हूँ और वैसा ही आत्मविभोर हो रहा हूँ।" केदारनाथ अग्रवाल बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। एक तरफ़ वह हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं, दूसरी ओर दबे–कुचले, शोषितों के हक़ की लड़ाई लड़ने वाले वकील हैं। एक ओर वह पत्नी–प्रेम के अनन्य उपासक हैं तो दूसरी ओर प्रकृति–प्रेम के बड़े द्रष्टा है। केदार अपने आलोचक मित्र रामविलास शर्मा के नाम की व्याख्या कुछ इस अंदाज़ में करते हैं – "हे ग़लत नाम के सही आदमी। राम, देखो न अपना नाम। 'राम' के आगे 'विलास' का संबंध यह सरासर सब तरफ़ से असंगत है। बेचारा राम तो 'विलास' से कोसों दूर रहा। सीता मिलीं। ठीक वैसे ही तुम। तुम्हारा नाम भी तुम्हारे जीवन गुण के सर्वथा विरुद्ध है।"

रामविलास शर्मा जैसे धुरंधर आलोचक के नाम की इतनी अद्‌भुत, अनोखी व्याख्या केदार जैसा अतरंग और प्रेम का सच्चा कवि ही कर सकता है। केदार की दृष्टि बहुत सूक्ष्म और सार गर्भित है। वह विषय की तह तक पहुँचते हैं। व्यंग्य का पैनापन उनकी कविताओं के साथ–साथ उनके पत्रों में भी मिलता है। अवसर मिलने पर केदार व्यंग्य करने से नहीं चूकते। रामविलास शर्मा के पास अपनी कविता भेजने पर पत्र में लिखते हैं – "कहिए जनाब! न कुछ काम की कविता। अगर अच्छी लगे तो अपनी पीठ ठोंक लेना मेरी समझकर। न अच्छी लगे तो अपने गाल लाल कर लेना चपत लगाकर मेरे गाल समझकर।" केदार का व्यक्तित्व एक कवि का व्यक्तित्व है। वह दुनिया को उसे वास्तविक रूप में देखते हैं। कहीं रीझते हैं, कहीं किसी बात पर खिन्न होते हैं, तो दूसरे ही क्षण प्रसन्न दिखायी देते हैं। केदार के पत्रों में उनका व्यक्तित्व अधिक पारदर्शिता से प्रकट हुआ है।

रामविलास शर्मा की तुलना में केदार के पत्र अधिक लंबे, रोचक और आत्मीय हैं। डॉ॰ शर्मा केदार के गद्य के कायल हैं, उन्होंने 'मित्र संवाद' की भूमिका में लिखा – "केदार के गद्य में बहुत भाव दशाएँ हैं। कहीं वह रीझते हैं, कहीं खीझते हैं, कहीं उत्तेजित कहीं स्थिति प्रज्ञ, कहीं दुःखी, कहीं प्रसन्न, कहीं किसी व्यक्ति अथवा वृत्ति से तादात्म्य, आपा खोये हुए, बेसंभाल, कहीं एकदम तटस्थ, विवेकशील, तर्क का सूत कातते हुए मन ही मन हँसते हुए उनकी अनेक मुद्राएँ हैं, अनेक भंगिमाएं हैं।" दोनों मित्र प्रकृति के प्रगाढ़ प्रेमी हैं। उन्होंने अपने पत्रों में पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ प्रकृति के मनोहारी दृश्यों की भी चर्चा की है। केदार प्रकृति के अनन्य प्रेमी हैं। उनके पत्रों में धूप, हवा, वर्षा, गरमी, सर्दी तथा आसपास के परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति हुई है। दोनों मित्र प्रकृति के क्रिया–कलाप को खुली आँखों से देखते हैं। डॉ॰ शर्मा चाहते हैं कि केदार प्रकृति पर अधिक कविताएँ लिखें और जब केदार इस ओर ध्यान नहीं दे पाते, तब रामविलास शर्मा पूछते हैं – क्या इस बार खेत में लहराती सरसों नहीं देखी? केदार का जवाब होता है – "दिल की सरसों न सूखी है – न सूखेगी वह तो सावन भादों में भी बादलों और बिजलियों के बीच अब भी लहरा रही है।" केदारनाथ अग्रवाल का सबसे अच्छा गद्य उनकी आलोचना में नहीं है। वह जीवन की सामान्य घटनाओं को चित्रित करने वाला गद्य है। यानी कलात्मक गद्य उनका बहुत अच्छा है। केदार ने अपने पत्रों में आसपास के परिवेश का जैसा चित्रण किया है, वह पत्र–साहित्य में दुर्लभ है। बानगी का एक नमूना देखिए – "सामने नल चल रहा है। पानी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

बोल रहा है आँगन के कच्चे कोने में पहले की कटी, रातरानी ने पत्तियाँ निकाल दी हैं। वह ज़रूर जियेगी और महकेगी। तुलसी थाले की तुलसी लंबी हो गयी है जैसी सयानी कन्या। तार पर उतारे हुए कपड़े–ओलौती के नीचे टंगे हैं। कोई काला है। कोई सफेद। कोई अचकन है। कोई पाजामा है। हाँ 'बनियाइनें' भी हैं – धुली, साफ़, गोरी–गोरी। झझ्झर पर गिलास उल्टाया है। पता नहीं कि पानी ठंडा है या नहीं।" केदार ने प्रकृति और परिवेश को मानवीकरण रूप में चित्रित कर सजीव कर दिया है। केदार की क़लम का स्पर्श पाकर परिवेश बोल उठा है। डॉ॰ शर्मा ने जब ओस की बूंदे पत्तों से टपकती हुई देखीं तो उन्होंने केदार को पत्र में लिखा – "आज सबेरे घनघोर कुहरा था। आम के पत्ते, पीपल के पत्ते, बरगद के पत्ते, सब से ओस की बूंदे टपकने का स्टाइल अलग–अलग था।"

केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा की मित्रता अपने तक सीमित नहीं है। सामाजिक सरोकारों तक उसका विस्तार है। कहीं पर कुछ ग़लत या अनुचित घटता है, तो दोनों मित्र उसे सही और व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं। हिंदी लेखकों और पाठकों के दुःख को भी वे अपने दुःख से इतर नहीं मानते हैं। बलभद्र दीक्षित अवधी के कवि और हिंदी के समर्थ गद्य लेखक थे। उनके पुत्र बुद्धिभद्र के देहांत पर डॉ॰ शर्मा केदार को पत्र में लिखते हैं – "मैं चाहता हूँ कि उनके मित्र उनके परिवार के लिए कुछ मासिक बचाया करें परंतु इसका विज्ञापन न होना चाहिए। यह अपने मित्रों तक ही रहे। उनके परिवार में बुद्धिभद्र की विधवा तथा पाँच छोटे बच्चे हैं।" पत्र पढ़कर महाकवि तुलसीदास का स्मरण आता है – "परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।। दोनों मित्र परपीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उसको दूर करने के लिए तत्पर रहते हैं। परहित से पीछे नहीं हटते। आज लेन–देन उलट–फेर की संस्कृति में ऐसे लेखक मित्र मिलना सहज नहीं है। आज के लेखकों को ये पंक्तियाँ बार–बार पढ़नी चाहिए।

इन पत्रों में निराला दोनों मित्रों के प्रिय लेखक और अभिभावक के रूप में उपस्थित होते हैं। निराला के प्रति उनके मन में अनंत श्रद्धा है। वह दोनों मित्रों के प्रेरणा–स्रोत हैं। निराला का सुख–दुःख उनका अपना है। निराला तमाम उम्र प्रकाशकों, अवसरवादी लेखकों और सरकारी तंत्र से संघर्ष करते रहे। जब समूचा हिंदी जगत् निराला को साहित्य से बाहर खदड़ने पर उतारू था, ऐसे प्रतिकूल समय में डॉ॰ रामविलास शर्मा ने अपनी मौलिक और प्रखर आलोचना के बल पर निराला को हिंदी के उस शीर्ष पर बैठाया, जिसके वह वास्तविक अधिकारी थे। डॉ॰ शर्मा ने निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व पर 'निराला की साहित्य साधना' (तीन खण्ड) पुस्तक लिखी। उसी पुस्तक पर उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दोनों मित्रों का अपना साहित्यिक समाज है। इस यात्रा में उनके अनेक अंतरंग सहचर हैं, जो मित्र संवाद में समय–समय पर शामिल होते रहते हैं, निराला, अमृतलाल नागर, शमशेर, त्रिलोचन शास्त्री, नरोत्तम नागर, नामवर सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी, अजय तिवारी आदि उनके संवाद क्रम में आते–जाते रहते हैं। डॉ॰ शर्मा नागार्जुन के विषय में केदार को एक पत्र में लिखते हैं –"नागार्जुन में ताज़गी है। कहीं भी खा सकते हैं, कहीं भी सो सकते हैं, इस मामले में पूरे संत हैं। और व्यंग्य उनकी नस–नस में भरा है।" प्रगतिशील कवियों में नागार्जुन में सर्वाधिक व्यंग्य मिलता है। नागार्जुन सिर्फ़ दूसरों पर ही व्यंग्य नहीं करने से नहीं चूकते हैं, वह स्वयं पर भी व्यंग्य करते हैं। 'मित्र संवाद' के पत्र–लेखक अपने अन्य मित्रों की प्रतिभा और हुनर का भी सम्मान करते हैं। त्रिलोचन शास्त्री की विद्वता को स्वीकार करते हुए रामविलास शर्मा ने केदार को बताया कि मुलाक़ात में त्रिलोचन – "अधिकतर शब्दों की चर्चा करते रहे वह जमकर काम नहीं कर पाते, नहीं तो बहुत कुछ कर चुके होते।"

'मित्र संवाद' एक युग की अभिव्यक्ति अपने अंदर संजोए है। इसका प्रत्येक पत्र अपनी साहित्यिकता, आत्मीयता की कसौटी पर पूर्ण सार्थक है। जैसा कि 'मित्र संवाद' के संपादक डॉ॰ अशोक त्रिपाठी का मानना है –"ये पत्र हैं तो सिर्फ़ दो व्यक्तियों के लेकिन इसमें दुनिया–जहान की बातें मिलेंगी। तटस्थता के साथ नहीं एक गहरे सरोकार के साथ दुनिया में क्या हो रहा है और मनुष्यता के साथ उसका कैसा रिश्ता बन रहा है – मनुष्य पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, इस चिंता के साथ पड़ोस की घटना से लेकर विश्व के किसी कोने में घटने वाली घटना उन्हें उत्तेजित करती है। इन घटनाओं पर इनकी सार्थक टिप्पणियाँ हैं।"

केदारनाथ अग्रवाल जिस सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति का सौंदर्य अवलोकते हैं, उतनी ही पैनी निगाह सामाजिक विकास और पतन पर भी रखते हैं। वह अपने परिवेश और युग को अनदेखा नहीं करते। उनका चिंतन–मनन कालबोध की सीमाओं में विकसित हुआ है। समाज में बढ़ती हुई महंगाई को देखकर उन्होंने रामविलास शर्मा को पत्र में लिखा – "महंगाई कुतुबमीनार से भी ऊँचे पहुँच गई हैं। मनुष्य चींटी की तरह छोटा हो गया है। और कन–कन की तलाश में दिन–रात जुट गया है।" केदार की यह टिप्पणी अपने समय के कटु सत्य को व्यक्त करती है। कम शब्दों में नपी–तुली बात कहना केदार के गद्य की विशेषता है। कवि होने के साथ–साथ वह एक वकील भी हैं। एक पक्ष पर जहाँ अपनी कविता से संघर्ष करते हैं, वहीं दूसरी ओर वकालत भी चलाते हैं। विषयवस्तु को गहरे जाकर छानबीन करना दोनों विषयों में आवश्यक है। केदार वकील होने के नाते राजनीति के हर अच्छे–बुरे पक्ष से परिचित हैं। सामाजिक परिवेश का चित्रण कविताओं के साथ–साथ उनके पत्रों में भी मिलता है। भारतीय न्याय व्यवस्था का चित्रण वह अपने एक पत्र में कुछ इस तरह से करते हैं –"मुकदमे में जैसी दृष्टि से तहक़ीकात

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

करनी चाहिए वैसी तहक़ीकात दारोगा नहीं करते। इससे सफलता नहीं मिलती और अधिकतर अभियुक्त छूट जाते हैं, जो कि दोषी भी होते हैं। अदालत में न्याय न पाकर लोग स्वयं न्याय कर लेते हैं हत्याएँ होती रहती हैं।" पत्र की अंतिम पंक्ति में भारतीय पुलिस प्रशासन का वास्तविक चित्र उभरकर आया है। समाज में बढ़ती गुंडागर्दी और अपराध के प्रति डॉ॰ शर्मा भी चिंता व्यक्त करते हुए पत्र में लिखते हैं –"समाज में गुंडागर्दी इतनी बढ़ गयी है कि साहसपूर्ण उसका मुकाबला करना अत्यावश्यक है और जो ऐसा करते हैं वह अभिनंदनीय हैं परिणाम कुछ भी हो। जिये तो मर्द की तरह वरना ज़िंदगी से मौत अच्छी।" समाज में फैलते अवसरवाद, अराजकता और भ्रष्टाचार का दोनों रचनाकार विरोध करते हैं।

समाज के उच्च प्रतिष्ठित शिक्षित समुदाय के लोग जिन्हें समाज की प्रगति में योगदान देना चाहिए वे ही जब समाज की जड़ों को खोखला करते हैं, तो ऐसे में डॉ॰ शर्मा केदार को पत्र में बताते हैं –"यह कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी विद्यापीठ (आगरा) गंदी राजनीति का दलदल है और यहाँ सफल निदेशक वही माना जाता है, जो इधर–उधर से पैसा लाये और खिलाये काम का प्रदर्शन खूब करें चाहे कुछ भी न करें।" रामविलास शर्मा सामाजिक सरोकारों और दायित्वों की दृष्टि से सरकारी तंत्र और संस्थाओं के प्रति अपना रोष व्यक्त करते हैं। केदार इस बात से दुःखी होते हैं कि समाज में बिगड़े हालात को सुधारने में कोई पहल नहीं करना चाहता। कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेता – न घर के बाहर, न सड़क में – न कचहरी में। वही बेहाल चालू है। जनता निरंतर शोषण की चक्की में पिसती रहती है। समाज में ऊपरी दिखावे और आडंबर को देखकर रामविलास शर्मा पत्र में लिखते हैं – "ब्याह–बारात में जाने पर असभ्यता की नुमाइश देखने को मिलती है। जी घिनाता है, हम पैसे वाले हैं, हमारे ठाठ देखो, महिलाओं की चमकदार साड़ियाँ देखो डालडा में सना पकवान चखो। भीतर से सब खोखले।" समाज में विस्तार पाती अपसंस्कृति और टूटते जीवन–मूल्यों पर रामविलास शर्मा की चिंता जायज है। ऐसे समाज में बढ़ती सांप्रदायिकता, जातिवाद, भाई–भतीजावाद और प्रांतवाद को भी वह समाज की प्रगति में बाधक मानते हैं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के विषय में केदार को बताते हैं – "छात्रों में गुंडागर्दी उनके गुरुओं में जातिवाद–विशेष रूप में ब्राह्मण–ठाकुरवाद यहाँ की आकर्षक विशेषताएँ हैं।" रामविलास शर्मा एक आशावादी आलोचक हैं। वह समस्याओं और संकटों से पलायन नहीं करते। आशा, उम्मीद और संघर्ष को पकड़े रहते हैं। उनकी सोच है कि समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है, उसके लिए एक होकर ईमानदारी से काम करने की ज़रूरत है। डॉ॰ शर्मा अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर होने के साथ अनेक भाषाविद् भी हैं। वह किसी विषय का विश्लेषण विशाल फलक पर करते हैं। अपनी आलोचना पद्धति में भारतीय और पाश्चात्य दृष्टियों का तुलनात्मक विवेचन करते हैं। ऐसा ही एक पत्र उन्होंने भवभूति और शेक्सपीयर के संदर्भ में लिखा – "शेक्सपीयर के चार बड़े नाटकों में जिस शोकाभिभूत अर्द्धविक्षिप्त अवस्था का वर्णन किया गया है, वह भवभूति में है। वह एक–पत्नी अथवा एक–प्रेमिका वाले प्रेम के अनुपम कवि हैं। जैसा उत्कट प्रेम है, वैसा ही घनघोर मर्मभेदी शोक है। .. केवल भवभूति को पढ़ने के लिए मनुष्य को संस्कृत जानना चाहिए।" डॉ॰ शर्मा के पत्रों में उनके व्यापक अध्ययन–मनन की छाप है। उन्होंने देशी–विदेशी साहित्य का गहराई से अध्ययन किया है। 'मित्र संवाद' के अनेक पत्रों में पाश्चात्य साहित्य और उसके रचनाकारों पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ देखी जा सकती हैं। रामविलास शर्मा पत्र को साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा मानते हैं। उनका मानना है कि पत्र साहित्य की अनेक दूसरी विधाओं को भी रचनात्मक सहयोग प्रदान करता है। अंग्रेज़ी कवि और निबंधकार चार्ल्स लैंब के पत्र पढ़ते हुए को पत्र में बताते हैं – "चार्ल्स लैंब के पत्र पढ़ते हुए उसकी वीरता पर बड़ी श्रद्धा हुई। उसकी बहन अर्द्ध विक्षिप्त और अर्धमृत–सी थी लेकिन उसके निबंधों में इस ट्रेजडी की छाया भी नहीं पड़ने पाई। भाषा पर उसका अधिकार शेक्सपीयर जैसा है। हकलाता भी था, शराब भी पीता था, क्या करें जन्म भर कँवारा भी तो रहा था।" ऐसे ही वह अपने 25.5.88 के लिखे पत्र में अमेरिकी कवि वाल्ट व्हिटमैन के पत्रों की मार्मिकता की चर्चा केदार से करते हैं।

'मित्र संवाद' के पत्रों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सरोकारों की चर्चा दोनों लेखकों की सामाजिकता और वैश्विक सजगता को प्रकट करती है। विश्व स्तर पर क्या घट रहा है? उसका आम जन–जीवन पर क्या और कैसा असर होगा – इन पत्रों में उसके संदर्भ जुड़े हैं। दक्षिण अफ्रीका के लोकप्रिय जन नेता नेल्सन मंडेला की रिहाई पर डॉ॰ शर्मा ने केदार को पत्र में लिखा – "नेल्सन मंडेला की रिहाई पर सब लोग ख़ुश बहुत हैं। इस ख़ुशी में वह गुस्सा खो गया है जो उन्हें 27 साल जेल में रखने वालों पर आना चाहिए। रंगभेद का आर्थिक आधार दक्षिण अफ्रीका में लगी हुई जर्मन–ब्रिटिश–अमरीकी पूँजी है। इस आधार को ध्वस्त किए बिना दक्षिण अफ्रीका में लोकतंत्र पूरी तरह कायम नहीं हो सकता।" रामविलास शर्मा किसी घटना को वैश्विक कसौटी पर जाँचते–परखते हैं। 'मित्र संवाद' के पत्रों की एक खूबी है कि इनमें वैश्विक स्तर की घटनाओं पर दोनों मित्रों की खुलकर चर्चा होती है। वे अपने समय की चुनौतियों और चिंताओं को लेकर गंभीर हैं। अमरीका की चौधराहट के प्रतीक राष्ट्रपति बुश के प्रति केदार के मन में कितना नफ़रत और गुस्सा है, इसके लिए एक शब्द पर्याप्त है और वह है "बुश" का हिंदी रूपांतर "झाड़ी"। इस संदर्भ में केदार के तीन चार पत्र हैं और सब में उन्होंने बुश को 'झाड़ी ही कहा है। सर्वहारा समाज के प्रति इन दोनों मित्रों के हृदय में सद्भावना और

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

सहानुभूति है। रामविलास शर्मा का केदार को लिखा यह पत्र उनके चिंतन की व्यापकता और राजनैतिक, सामाजिक सरोकारों को व्यक्त करता है –"इन दिनों जिस पुस्तक की सबसे ज़्यादा चर्चा होनी चाहिए उसके बारे में लोग चुप्पी साधे हैं। वह पुस्तक है लेनिन की 'साम्राज्यवाद'। इजारेदार पूँजी का केंद्रीकरण, बड़े डाकुओं द्वारा दुनिया का बंटवारा, दुनिया की जातियों का साहूकार और कर्ज़दार – दो तरह की जातियों में बंट जाना, यह सब लेनिन ने अच्छी तरह से समझाया है।" केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा की मित्रता मार्क्स और एंगेल्स की मित्रता से कम नहीं है। जैसे दर्शन और क्रांति के क्षेत्र में मार्क्स एंगेल्स की मित्रता एक स्तम्भ है। वैसे ही साहित्य के क्षेत्र में केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास की मित्रता प्रेरणा–स्रोत बनती है। डॉ॰ नामवर सिंह ने 'मित्र संवाद' को जनता के कवि और समालोचक का 'हृदय संवाद' कहा है। उनका कहना है कि "रामविलास जी केदार की दोस्ती की मिसाल हिंदी के इतिहास में नहीं है।" 'मित्र संवाद' साहित्य और समाज में मित्रता का एक आदर्श प्रतिमान स्थापित करता है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि 'मित्र संवाद' के पत्र महज औपचारिक और सूचनात्मक नहीं हैं। ये दो दिग्गज लेखकों के द्वारा लिखे गए महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्र हैं। इनमें आधी शताब्दी से अधिक का समय पाठकों से सार्थक संवाद करता है। इन पत्रों में दोनों लेखक आत्माभिव्यक्ति द्वारा जहाँ एक ओर अपने सहज व्यक्तित्व का परिचय देते हैं, वहीं दूसरी ओर वे पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और साहित्यिक परिवेश की अभिव्यक्ति करने में भी पूर्ण सफल होते हैं। साथ ही राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उथल–पुथल के चित्र भी इन पत्रों में अंकित हैं। 'मित्र संवाद' के पत्रों में दुनिया–जहान की बातें एक गहरे सरोकारों के साथ दर्ज़ हैं। ये पत्र दुर्लभ मैत्री के जीवंत दस्तावेज़ है। हिंदी साहित्य के इतिहास में आधी सदी से अधिक चलने वाली ऐसी मित्रता एक मिसाल है। ये पत्र पाठकों को सहज समृद्ध करते हैं, 'मित्र संवाद' के पत्रों की यही सबसे बड़ी उपलब्धि है।

आधार ग्रंथ : शर्मा, रामविलास/अग्रवाल केदारनाथ संपा॰, मित्र संवाद, भाग–1–2, केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा के पत्रों का संकलन, (2010 प्रथम संस्करण), साहित्य भंडार, इलाहाबाद।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी, विनोद संपा॰, पक्षधर–पत्रिका अंक 08, वाराणसी।
2. भूमिका – मित्र संवाद भाग–1, पृष्ठ–11.
3. अग्रवाल, केदारनाथ, मेरे साक्षात्कार, (संस्करण 2009), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–162.
4. मित्र संवाद भाग–1, पत्र–3.1.36, पृष्ठ–40.
5. सिंह, डॉ॰ नामवर संपा॰, आलोचना (पत्रिका) जनवरी–अप्रैल 1982, पृष्ठ–123.
6. भूमिका, मित्र संवाद भाग–1, पृष्ठ–13.
7. भूमिका, मित्र संवाद भाग–1, पृष्ठ–13.
8. वही, पृष्ठ–13.
9. वही, पत्र–12.7.41, पृष्ठ–56.
10. वही, पत्र–8.3.45, पृष्ठ–83.
11. वही, पत्र–30.9.56, पृष्ठ–141.
12. वही, पत्र–8.12.43, पृष्ठ–71.
13. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–11.11.68, पृष्ठ–82.
14. मित्र संवाद भाग–1, पत्र–12.12.56, पृष्ठ–158.
15. वही, पत्र–10.2.43, पृष्ठ–59.
16. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–18.1.70, पृष्ठ–93.
17. मित्र संवाद भाग–1, पत्र–17.4.58, पृष्ठ–250
18. वही, पत्र–16.5.56, पृष्ठ–135.
19. वही, पत्र–17.3.63, पृष्ठ–299.
20. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–2.3.76, पृष्ठ–138.
21. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–7.12.81, पृष्ठ–176
22. मित्र संवाद भाग–1, पत्र–4.3.11, पृष्ठ–262.
23. वही, पत्र–30.12.58, पृष्ठ–229.
24. वही, भूमिका, पृष्ठ–14–15.
25. वही, पत्र–5.9.57, पृष्ठ–189.
26. वही, पत्र–23.7.58, पृष्ठ–215.
27. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–17.12.87, पृष्ठ–243.
28. मित्र संवाद भाग–1 पत्र–11.1.43, पृष्ठ–58.
29. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–29.7.65, पृष्ठ–55.
30. वही, पत्र–15.3.88, पृष्ठ–248.
31. मित्र संवाद भाग–2 मित्र संवाद से गुजरते हुए – अशोक त्रिपाठी, पृष्ठ–26.
32. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–5.8.64, पृष्ठ–49.
33. वही, पत्र–22.7.64, पृष्ठ–49.
34. वही, पत्र–27.10.72, पृष्ठ–113.
35. वही, पत्र–12.12.88, पृष्ठ–262.
36. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–20.5.83, पृष्ठ–192
37. वही, पत्र–21.8.70, पृष्ठ–99.
38. मित्र संवाद भाग–1, पत्र–27.2.57, पृष्ठ–169–170.
39. मित्र संवाद भाग–2, पत्र–12.2.90, पृष्ठ–282
40. वही, पत्र–17.7.88, पृष्ठ–258.
41. मित्र संवाद भाग–1, पत्र–17.1.55, पृष्ठ–128
42. देखिए –सिंह, नामवर संपा॰, आलोचना (जुलाई–सितंबर, 2000)।

*****